हिमाचल प्रदेश में गद्दी जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराएँ, रीति–रिवाज, त्योहार और अनुष्ठानों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

राकेश कुमार [1], अमीर फैसल [2]
[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, 226025
Email: rickey48590@gmail.com
[2]शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, 226025
Email: amirf9441@gmail.com

सार

हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाली गद्दी जनजाति मुख्य रूप से चंबा और कांगड़ा जिलों में निवास करती है। उनकी ऐतिहासिक परंपराओं, देहाती अर्थव्यवस्था और आधुनिक आर्थिक गतिविधियों के साथ क्रमिक एकीकरण द्वारा आकार लेने वाली एक अनूठी सामाजिक–आर्थिक संरचना है। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में मुख्य रूप से निवास करने वाली गद्दी जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना है, जो इसके भौगोलिक और ऐतिहासिक संदर्भ से गहराई से प्रभावित है। यह शोधपत्र समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गद्दी जनजाति के सामाजिक जीवन की खोज करता है, जिसमें उनके रिश्तेदारी प्रतिरूप, विवाह रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास, आर्थिक गतिविधियाँ और आधुनिकीकरण के जवाब में सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग किया गया है, जो गद्दी समुदाय के सामाजिक ताने–बाने में होने वाले परिवर्तनों को समझने के लिए नृवंशविज्ञान संबंधी विवरणों और द्वितीयक स्रोतों से ली गई है।

मुख्य शब्द : गद्दी जनजाति, पशुपालन, प्रथाएँ, नुआला, जातर, हदवारी

परिचय

गद्दी जनजाति हिमाचल प्रदेश के महत्वपूर्ण स्वदेशी समुदायों में से एक है, जो मुख्य रूप से चंबा जिले के उच्च–ऊंचाई वाले क्षेत्रों में निवास करती है। परंपरागत रूप से, वे ट्रांसह्यूमन चरवाहे के रूप में काम करते रहे हैं, हालाँकि सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने उनके जीवन के तरीके को बदल दिया है। इस शोध का उद्देश्य पारिवारिक गतिशीलता, सामुदायिक संगठन और सांस्कृतिक परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए गद्दी सामाजिक संरचना का गहन समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रदान करना है। मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के चंबा और कांगड़ा जिलों में रहने वाली गद्दी जनजाति अपनी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं के लिए जानी जाती है। ऐतिहासिक रूप से, गद्दी एक अर्ध–खानाबदोश चरवाहा समुदाय रहा है, जो भेड़ और बकरी पालन में लगा हुआ है।

हिमाचल प्रदेश में एक स्वदेशी चरवाहा समुदाय, गद्दी जनजाति ने सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाते हुए एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखा है। शोधपत्र मे गद्दी जनजाति की

सामाजिक परंपराओं, जिसमें रिश्तेदारी, विवाह, व्यवसाय और धार्मिक प्रथाएँ शामिल हैं, के साथ–साथ सामाजिक गतिशीलता पर उनके प्रभाव को बताया गया हैं। अध्ययन में पता लगाया गया है कि आधुनिकीकरण, शिक्षा और सरकारी नीतियों ने गद्दी लोगों की सामाजिक गतिशीलता को कैसे प्रभावित किया है, जिससे उनकी पारंपरिक भूमिकाओं और स्थिति में बदलाव आया है।

गद्दी जनजाति मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के चंबा के अतिरिक्त, कांगड़ा और मंडी के कुछ हिस्सों में निवास करती है। वे पारंपरिक रूप से चरवाहे हैं, भेड़ और बकरी पालन में लगे हुए हैं, हालांकि कई लोग कृषि, व्यापार और सरकारी नौकरी में भी विविधता ला चुके हैं। ऐतिहासिक रूप से अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत, गद्दी ने सामाजिक और आर्थिक हाशिए का सामना किया है, लेकिन अपनी स्थिति को सुधारने के लिए सरकारी नीतियों का लाभ भी उठाया है। गद्दी लोगों के बीच पारंपरिक प्रथाएं उनके चरवाहे और कृषक के रूप में उनके व्यवसाय से निकटता से जुड़ी हुई हैं। पशुधन के साथ मौसमी प्रवास, जिसे स्थानीय रूप से 'गोथ' संस्कृति के रूप में जाना जाता है, एक प्रमुख परंपरा है जो उनकी आर्थिक गतिविधियों और सामाजिक पहचान को परिभाषित करती है। वे चोला (लंबा अंगरखा) और डोरा (ऊनी बेल्ट) सहित पारंपरिक पोशाक का भी पालन करते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। मौखिक परंपराएँ, लोकगीत और नृत्य रूप सामुदायिक संबंधों को और मजबूत करते हैं और ऐतिहासिक आख्यानों को संरक्षित करते हैं।

गद्दी जनजाति : एक अवलोकन

"गद्दी" एक संस्कृत नाम है जिसका अर्थ है "आसन"। मुगल शासक औरंगजेब के शासन काल के दौरान, कुछ हिंदू हिमाचल प्रदेश के धौलाधार क्षेत्र में भरमौर नामक स्थान पर बस गए। उन्होंने गद्दी (भगवान की कुर्सी) जैसा एक राज्य स्थापित किया। इसमें शामिल सभी लोग "गद्दी" के नाम से जाने जाते हैं। मानव सभ्यता खानाबदोश जीवन से लेकर निवासियों के जीवन तक की जीवन प्रगति की यात्रा है। खानाबदोशों का कोई स्थायी निवास स्थान नहीं होता। गद्दियों में विशिष्ट जातियों को चरवाहा कहा जाता है, और मार्च में वे अपने मवेशियों (बकरी और भेड़) के साथ एक विशिष्ट स्थान से उपजाऊ चरागाह या हरी घास की ओर चले जाते हैं। और फिर अगस्त महीने में अपने गृहनगर लौट आते हैं। परिवार के सभी लोग खानाबदोश जीवन शैली नहीं अपनाते हैं, और कुछ सदस्य खानाबदोश की तरह रहना पसंद करते हैं। यह कला, नृविज्ञान, इतिहास, पुरातत्व, लोककथा और सांस्कृतिक अध्ययन जैसे विषयों में सिद्धांत और अभ्यास प्रदान करता है। चूंकि यह जनजाति अर्ध–आप्रवासी हो सकती है, इसलिए उन्हें गर्मियों में ढलान वाले क्षेत्रों में और सर्दियों में मैदान में अपने लोगों से मिलने की आदत होती है। जैसा कि हिमाचल प्रदेश जनगणना ब्यूरो ने बताया है, जो कोई भी लंबे समय तक भरमौर तहसील में रहता है, वह खुद को गद्दी कहता है। गद्दी की बस्तियां हिमाचल प्रदेश और जम्मू के पहाड़ों में बिखरी हुई हैं। हालाँकि गद्दियों का मुख्य मिलन बिंदु हिमाचल प्रदेश के चंबा क्षेत्र में भरमौर क्षेत्र में है, लेकिन उन्हें व्यापक रूप से हिमाचल प्रदेश के गद्दी के रूप में जाना जाता है।

2011 के आकलन से संकेत मिलता है कि 178,130 गद्दी थे। जम्मू के गद्दी इस बात से सहमत थे कि उन्हें हिमाचल प्रदेश के भरमौर तहसील से जम्मू की ढलानों पर जाना पड़ा। गद्दी अर्ध–शांतिपूर्ण व्यक्ति हैं जो ऊंचे इलाकों में बड़ी संख्या में भेड़ और बकरियों के संपर्क में आते हैं दिलचस्प बात यह है कि इस प्रक्रिया में, उन्होंने गर्मियों में खुद को मूसलाधार बारिश से बचाने के लिए समुद्र तल से लगभग 3,500 से 7,000 फीट की ऊंचाई पर हडवारियां (अस्थायी आश्रय) विकसित किए। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन हडवारियों का उपयोग आमतौर पर साहसी लोगों द्वारा किया जाता है। बावजूद इसके, गद्दी सूचीबद्ध जनजाति अब पेशे के रूप में कृषि व्यवसाय पर बहुत अधिक निर्भर करती है। उनमें से कुछ ने मैनुअल श्रमिकों के रूप में काम करना शुरू कर दिया और उनमें से कई ने स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित नहीं किए। कुछ गद्दियों ने सरकारी पदों भी प्राप्त किया है। गद्दी लोग हिमालय में चले गए हैं। उनमें से कुछ आध्यात्मिकता की तलाश में हैं, जबकि अन्य लाभ की तलाश में हैं। हालांकि, यह स्थान 12 वीं शताब्दी तक भुला दिया गया था, जब महाद्वीप से चरवाहों ने यहां स्थापित किया। ये बकरी और भेड़ चराने वाले लोग हिमालय में सबसे महत्वपूर्ण प्रवासी जनजातियों में से एक हैं। यह पारंपरिक रूप से विडंबनापूर्ण समुदाय हिमालय में मौजूद है, जो चंबा में भरमौर तहसील (डिवीजन), कांगड़ा के कुछ हिस्सों (पालमपुर, धर्मशाला और बैजनाथ प्रमुख हैं), हिमाचल प्रदेश, मंडी जिले और भारत के उत्तरी राज्यों में जम्मू और कश्मीर के कुछ हिस्सों में केंद्रित है।

कुछ लोगों का मानना है कि गद्दी आर्यों के वंशज हैं, जो सीधे भरमौर में बस गए या आस–पास के मैदानों से इस क्षेत्र में चले आए। गद्दी बर्फ से ढके पहाड़ों पर रहते हैं जो चंबा और कांगड़ा को अलग करते हैं। उनकी उत्पत्ति पंजाब में हुई, विशेष रूप से "मुहम्मद" आक्रमण ने उन्हें इन पहाड़ों पर शरण लेने के लिए मजबूर किया। गद्दी नाम "गद्देरन" शब्द से आया है, जो हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के इस हिस्से का स्थानीय नाम है, और "गड़रिया" (चरवाहों की हिंदी बोली) शब्द से आया है। यद्यपि ये सभी जातियाँ गद्दी कहलाती हैं और "गद्देरन" जिले में रहती हैं, लेकिन आस–पास के क्षेत्र में यह शब्द मुख्य रूप से श्रेष्ठ नामों ब्राह्मण और राजपूत पर लागू होता है। सामान्य शब्द "गद्दी" विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली विभिन्न जातियों के उपासकों को शामिल करता है। व्यापक स्वीकृति के अनुसार, वे शुरू में सिंध और पंजाब के एकीकृत प्रांतों के घास के मैदानों में रहते थे । औरंगजेब के शासनकाल के दौरान, वे उत्पीड़न और धर्मोपदेश से बचने के लिए कश्मीर चले गए। वे भरमौर (हिमाचल प्रदेश) के भू–आबद्ध क्षेत्र में आ गए और वहीं बस गए।

अनुसूचित जनजातियाँ

"अनुसूचित जनजाति" शब्द पहली बार भारतीय संविधान में दिखाई दिया। धारा 366 (25) अनुसूचित जनजातियों को "धारा 342 के तहत संवैधानिक उद्देश्यों के लिए समझी जाने वाली जनजातियों" के रूप में वर्णित करती है। हिमाचल प्रदेश में आठ ज्ञात जनजातियाँ हैं, विशेष रूप से लाहौला, बोध लोग, जाद लोग, कनौरा, पंगवाला, गूजर, स्वांगला और गद्दी। धारा 342 इच्छित जनजाति को परिभाषित करने के

विषय में सतत रणनीति को स्वीकार करती है। इन जनजातियों ने 1989 में एक निर्धारित जनजाति का दर्जा प्राप्त किया।

सामाजिक–सांस्कृतिक पहलू

गद्दी समुदाय मुख्य रूप से हिंदू है, जिसमें गहरी जड़ों वाली सांस्कृतिक परंपराएँ हैं जिनमें विशिष्ट पोशाक, भाषा (गद्दी बोली) और धार्मिक रीति–रिवाज शामिल हैं। वे शिवरात्रि, दशहरा और मिंजर जैसे त्यौहार मनाते हैं, जिनका सामाजिक और आर्थिक महत्व है। उनकी पारंपरिक पोशाक में पुरुषों के लिए 'चोला' और महिलाओं के लिए 'लुआंचारी' शामिल है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। जनजाति पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना का पालन करती है, जिसमें संयुक्त परिवार एक आम प्रथा है। निर्णय लेने में बुजुर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, और वंश और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिए आमतौर पर समुदाय के भीतर ही विवाह की व्यवस्था की जाती है।

आधुनिकीकरण ने गद्दी जनजाति के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों ही लाई हैं। बेहतर परिवहन, डिजिटल कनेक्टिविटी और सरकारी नीतियों ने बेहतर आर्थिक संभावनाओं को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, पारंपरिक देहाती अर्थव्यवस्था से अधिक विविध व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन ने सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों को जन्म दिया है।

गद्दी के बीच जाति और सामाजिक स्तरीकरण

एक आदिवासी समुदाय होने के बावजूद, गद्दी आंतरिक सामाजिक स्तरीकरण प्रदर्शित करते हैं। जनजाति मुख्य रूप से राजपूत गद्दी और ब्राह्मण गद्दी में विभाजित है, जिसमें व्यावसायिक भेदभाव पदानुक्रमिक स्थिति में भूमिका निभाता है। जबकि ब्राह्मण गद्दी पारंपरिक रूप से पुरोहिती गतिविधियों में लगे हुए हैं, राजपूत गद्दी मुख्य रूप से पशुपालन और कृषि में शामिल रहे हैं। लोहार और बुनकर जैसे कथित निम्न व्यावसायिक समूह भी गद्दी समुदाय के भीतर मौजूद हैं, जो जाति–जैसी सामाजिक संरचना को मजबूत करते हैं।

हालाँकि भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति (एसटी) के रूप में वर्गीकृत, गद्दी लोग एक आंतरिक जाति–जैसी स्तरीकरण प्रदर्शित करते हैं जो सामाजिक संबंधों, विवाह पैटर्न और आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। जनजाति में राजपूत, ब्राह्मण और निम्न–स्थिति वाली सेवा जातियाँ जैसे हली (बुनकर) और सिप्पी (चर्मकार) सहित विभिन्न उप–समूह शामिल हैं। राजपूत गद्दी, जो अक्सर उच्च सामाजिक पदों पर होते हैं, अंतर्विवाही विवाह प्रथाओं को बनाए रखते हैं, जिससे समुदाय के भीतर सामाजिक सीमाएँ मजबूत होती हैं। संवैधानिक सुरक्षा उपायों के बावजूद, गद्दी जीवन के सामाजिक और अनुष्ठानिक पहलुओं में जाति–आधारित भेद बने हुए हैं।

वर्ग और आर्थिक स्थिति

आर्थिक विविधीकरण ने गद्दी समुदाय के भीतर एक वर्ग–आधारित समाज के उद्भव को जन्म दिया है। भूमि स्वामित्व, सरकारी नौकरियों तक पहुँच और शैक्षिक प्राप्ति वर्ग गतिशीलता के प्रमुख निर्धारक हैं। बेहतर बुनियादी ढांचे और राज्य के नेतृत्व वाली पहलों के साथ, कई गद्दी लोग अपनी पारंपरिक पशुपालन अर्थव्यवस्था से वेतनभोगी रोजगार में परिवर्तित हो गए हैं, जिससे उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

व्यवसाय और आर्थिक प्रथाएँ

पशुपालन ऐतिहासिक रूप से गद्दी जनजाति का मुख्य व्यवसाय रहा है, भेड़ और बकरी पालन उनकी आजीविका का मुख्य हिस्सा रहा है। समय के साथ, आर्थिक विविधीकरण ने कृषि, सरकारी नौकरियों और छोटे व्यवसायों की ओर रुख किया है। चरने के लिए निचले इलाकों में मौसमी प्रवास अभी भी प्रचलित है, लेकिन आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों के कारण इसमें कमी आई है।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएँ

गद्दी लोग हिंदू धर्म का पालन करते हैं, जिसमें शैव धर्म का बहुत प्रभाव है। वे मणिमहेश यात्रा जैसे अनोखे त्यौहार मनाते हैं, जिसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। लोकगीत, नृत्य और मौखिक परंपराएँ उनकी पहचान को बनाए रखने में योगदान देती हैं। गद्दी जनजाति एक समन्वित धार्मिक प्रणाली का पालन करती है जो हिंदू धर्म को स्वदेशी मान्यताओं के साथ मिलाती है। अधिकांश गद्दी भगवान शिव की पूजा करते हैं, खुद को उनका भक्त मानते हैं। उनका धार्मिक जीवन मंदिरों, अनुष्ठानों और मौसमी त्योहारों जैसे मिंजर और मणिमहेश यात्रा के इर्द–गिर्द घूमता है। पूर्वजों की पूजा और लोक देवता भी उनके आध्यात्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ गद्दी समन्वयात्मक धार्मिक परंपराओं का पालन करते हैं जो स्थानीय एनिमिस्टिक मान्यताओं को मुख्यधारा की हिंदू प्रथाओं के साथ एकीकृत करती हैं, जो धार्मिक लचीलापन और सांस्कृतिक अनुकूलन प्रदर्शित करती हैं।

गद्दी जनजाति के भीतर सामाजिक गतिशीलता

शिक्षा गद्दी जनजाति के भीतर सामाजिक गतिशीलता का एक प्रमुख चालक रही है। अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण नीतियों सहित सरकारी पहलों ने उच्च शिक्षा और रोज़गार के अवसरों तक पहुँच बढ़ाई है। युवा पीढ़ी तेज़ी से शिक्षा प्राप्त कर रही है, जिससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ रही है।

सरकारी नीतियाँ और आरक्षण

विभिन्न सरकारी योजनाओं और सकारात्मक कार्रवाई नीतियों ने गद्दी समुदाय के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा और रोज़गार में आरक्षित कोटा ने नौकरशाही, तकनीकी और पेशेवर क्षेत्रों में प्रवेश की सुविधा प्रदान की है, जिससे पारंपरिक व्यवसायों से संक्रमण संभव हुआ है।

शहरीकरण और आधुनिकीकरण का प्रभाव

शहरी प्रवास ने गद्दी लोगों को नए सामाजिक–आर्थिक अवसरों से परिचित कराया है। जबकि जनजाति के कुछ सदस्य शहरी व्यवसायों में सफलतापूर्वक एकीकृत हो गए हैं, अन्य को प्रतिस्पर्धी श्रम बाजार में समायोजन करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इस द्वंद्व ने समुदाय के भीतर एक सामाजिक–आर्थिक विभाजन पैदा कर दिया है।

गद्दी जनजाति की प्रसिद्ध सांस्कृतिक प्रथाएँ

जातर

इस दिन, भगवान जातर को गाड़ी पर ले जाया जाता है, उसके पीछे चेला (देवता) होता है। जातर गद्दियों के बीच बहुत प्रसिद्ध है और पहाड़ में चाहे वे कहीं भी हों, सभी गद्दियों द्वारा किया जाता है। चेला चकित होकर पूछताछ, नागरिकों की भविष्यवाणियों का जवाब देते हैं और कुछ मामलों में लोगों को संभावित आपदाओं के बारे में चेतावनी देते हैं। इसे एक घर द्वारा अपने कुल (परिवार) देवताओं के लिए किया जाता है, जो नाग देवता, चौंड माता या भगवान शिव का पूरा समूह हो सकता है, जो गद्दियों के मुख्य देवता हैं। यह मान्यता है कि देवता (देवता) अपने चेलों के माध्यम से बोलते हैं।

नुआला

शब्द "नुआला" हिंदी के "नव माला" से आया है, जिसका अर्थ है अतिरिक्त माला। इसे भगवान शिव के लिए अजीब परिवार द्वारा किया गया था। गद्दियों के बीच आम सहमति यह है कि जब तक आप भगवान शिव से उनका नुआला बजाने का वादा करते हैं, वे आपकी इच्छाएँ पूरी करेंगे। त्योहार के इस चक्र के दौरान, एक तांबे का त्रमदा (कटोरा) मकई की फसलों से भरा होता है। पूजा के लिए नागरिक अपने घरों से ऊन लेकर जाते हैं, यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, और यह सुबह 2 बजे पूरा हो जाता है। घर में भेड़ की बलि (बलि) दी जाती है। इस जब्त किए गए जीव का कोई भी हिस्सा घर से बाहर नहीं ले जाया जाएगा, सिवाय कलेजा (जिगर) के, जिसे जीव काटने वाला ले जाता है और कलेजा को दरत या ध्रति (जीवों को काटने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली चाकू की धार) से जोड़ देता है। ध्रति को घर की छत पर ले जाया जाता है, जहाँ देवता कलेजा (जिगर) का हिस्सा प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। उस समय मेल–मिलाप के जीवों का वध करने वाले व्यक्ति ने दिखाया कि बलि (स्वीकारोक्ति) को प्रभावी ढंग से बढ़ावा दिया गया था। कलेजा (जिगर) का अतिरिक्त हिस्सा पकाया जाता है और प्रसाद के नाम से बांटा जाता है। इस अवसर पर, एकांत व्यक्ति को भोर तक घर के बाहर रखा जाता था। नागरिकों ने भगवान शिव को याद करने के लिए गीत गाए। एक दिन पहले, भोज तैयार करें और सभी या सभी एकत्रित लोगों को सेवा प्रदान करें, जिसका अर्थ है कार्यक्रम का अंत।

मणिमेश यात्रा

यह व्यक्तिगत रूप से गद्दी का एक महत्वपूर्ण सामाजिक हिस्सा हो सकता है। उनमें से, जम्मू और कश्मीर के गद्दी हिमाचल प्रदेश के चंबा क्षेत्र में मणिमेश तक 15 दिनों तक चलते हैं। वे भेड़ों को भगवान शिव के समक्ष स्वीकारोक्ति के लिए लाते है। हालांकि, हिमाचल प्रदेश की न्यायिक मांगों के कारण 2015 से इस तरह की भेड़ स्वीकारोक्ति बंद हो गई है।

खाना–पीना

गद्दी लोग अच्छा खाते हैं और मुख्य रूप से दूध और डेयरी उत्पाद, जैसे मक्खन, घी आदि पीते हैं। वे अपनी ताकत के लिए जाने जाते हैं। वे आम तौर पर भोजन तैयार करने के लिए घर की बनी सामग्री का उपयोग करते हैं और बाजार से बहुत कम उत्पाद खरीदते हैं। बर्फबारी के दौरान, वे लगभग चार महीने के लिए खाद्य पदार्थों को संग्रहीत करते हैं। कभी–कभी वे बबरू (पूरी), सतरावा (नमकीन नूडल्स), चेरावड़ी (मीठे नूडल्स) आदि जैसे विशेष खाद्य पदार्थ तैयार करते हैं। अधिकांश पुरुष सदस्य चांग लेते हैं, लेकिन कुछ बड़ी उम्र की महिलाएं भी चांग लेती हैं। ड्रेस गद्दी एक लम्बा (ढीला) चोगा पहनती है जो घुटने से नीचे होता है और कमर पर डोरा से बंधा होता है।

हदवारी

ये अस्थायी घर हैं जिनका इस्तेमाल गद्दी जनजातियाँ गर्मियों के दौरान करती हैं। ये ऊँचाई वाले इलाकों में बनाए गए थे। उन्होंने अप्रैल से अक्टूबर तक वहाँ लगभग सात महीने बिताने होते है। गद्दियों की एक अनूठी सामाजिक विरासत है, लेकिन शहरीकरण और गैर–आदिवासी समाजों के लिए बाधाओं के साथ, ये सामाजिक प्रथाएँ बिगड़ रही हैं।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों के सामने लचीलापन और अनुकूलनशीलता का उदाहरण है। जबकि वे अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना जारी रखते हैं, आर्थिक विविधीकरण और सरकारी सहायता उनके सतत विकास को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार में नीतिगत हस्तक्षेप उनकी सामाजिक–आर्थिक भलाई को और बढ़ा सकते हैं, जिससे परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन संभव हो सकता है। हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति परंपरा और आधुनिकता के चौराहे पर है। जहाँ सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों ने सामाजिक गतिशीलता को सुगम बनाया है, वहीं पारंपरिक प्रथाएँ उनके जीवन–शैली को प्रभावित करती रहती हैं। सरकारी नीतियों, शिक्षा और शहरीकरण ने नई आकांक्षाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, संरचनात्मक चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिसके कारण समुदाय के भीतर समान विकास सुनिश्चित करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति एक आदिवासी परिवेश में जाति, धर्म और परंपरा के बीच जटिल अंतर्संबंध का उदाहरण है। जबकि पारंपरिक संरचनाएं सामाजिक संगठन को प्रभावित करना जारी रखती हैं, बाहरी सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन धीरे–धीरे उनकी सांस्कृतिक पहचान को नया रूप दे रहे हैं। इन परिवर्तनों के बीच गद्दी परंपराओं का लचीलापन आधुनिकता के साथ जुड़ते हुए अपनी विरासत को बनाए रखने में जनजाति की अनुकूली रणनीतियों को उजागर करता है। आज दुनिया के बाकी हिस्सों की तरह, गद्दी जनजाति अभी भी अपनी जीवन शैली को बनाए हुए है।

क्षेत्र से पलायन करने वाले युवा लोग शायद ही गद्दी जातीय समूह के कपड़े पहनते हैं, और वे शायद ही गद्दी बोली, उनकी मुख्य भाषा बोलते हैं। गद्दी को एक सूचीबद्ध जनजाति का दर्जा प्राप्त है; यह शोध योजनाकारों को पूरक बनाने, योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाने और प्राकृतिक और मानव संसाधनों को यथासंभव व्यापक रूप से प्रबंधित करने के लिए चरवाहे समाज की बेहतर समझ को यथासंभव स्पष्ट रूप से प्रसारित करने का प्रयास करता है। वनों तथा उनके उत्पादों पर सूचना प्रणाली के विकास के लिए उच्च स्तर की पारदर्शिता की आवश्यकता है। यह न केवल संसाधन प्रबंधन के लिए, बल्कि पुनर्जनन के लिए भी आवश्यक है। इस तरह के प्रयास से न केवल पर्यावरण मानकों की पुष्टि होनी चाहिए, बल्कि संबंधित क्षेत्र की सामाजिक और आर्थिक संरचना की भी पुष्टि होनी चाहिए। इसलिए, किसी योजना या नीति को लागू करने के लिए क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण आवश्यक हैं।

संदर्भ

1. Singh, K. K., & Kumar, K. (2000). Ethnobotanical wisdom of Gaddi tribe in western Himalaya. Bishen Singh Mahendra Pal Singh.
2. GoI (2011), Census of India, Census Commissioner and Registrar General of India, New Delhi.
3. Chahal, S. M. S., Papiha, S. S., Roberts, D. F., & Singh, I. P. (1982). Serological and biochemical variation in the Gaddi tribe of Himachal Pradesh, India. Zeitschrift für Morphologie und Anthropologie, 197-208.
4. Ibbetson D (1916). The Races, Castes and Tribes of the People in the Report on the Census of Punjab, Superintendent, Govt. Printing Press, Punjab.
5. Dutt, B., Sharma, S., Sharma, K., Gupta, A., & Singh, H. (2011). Ethnobotanical survey of plants used by Gaddi tribe of Bharmour area in Himachal Pradesh. Himalayan Ecol, 19, 22.
6. Kapoor, A., Kanwar, P., & Sharma, N. (2008). Handicrafts heritage of Gaddi tribe of Himachal Pradesh.

7. Dutt, H. C., Bhagat, N., & Pandita, S. (2015). Oral traditional knowledge on medicinal plants in jeopardy among Gaddi shepherds in hills of northwestern Himalaya, J&K, India. Journal of ethnopharmacology, 168, 337-348.
8. Saini, R. (2020). THE GADDI TRIBE: Struggling to preserve its Identity. Available at SSRN 3595406.
9. Bala, M., Chahal, S. M. S., Jamwal, D., Raina, A., & Raina, V. (2019). Distribution of Human-Specific Alu Insertion/Deletion Polymorphisms in the Gaddi Tribe of Kangra District, Himachal Pradesh (North India). J Hum Ecol, 68(1-3), 11-15.
10. Pathania, M. S., & Dev, I. (2015). Rearing practices of migratory sheep and goats in Himachal Pradesh: A case study of Gaddi tribe.
11. Thakur, A., Singh, S., & Puri, S. (2020). Exploration of Wild Edible Plants Used as Food by Gaddis-A Tribal Community of the Western Himalaya. The Scientific World Journal, 2020.
12. Keya, P. (2011). Socio-economic status of tribal women: A study of a transhumant Gaddi population of Bharmour, Himachal Pradesh, India. International Journal of Sociology and Anthropology, 3(6), 189-198.
13. Raj, R., Kumar, R., & Kumar, V. (2020). Impact of Mobile Phone in Life Style of Gaddi Tribes. International Journal of Research in Engineering, Science and Management, 3(12), 48-51.
14. Christopher, S. (2020). 'Scheduled Tribe Dalit'and the Recognition of Tribal Casteism. Journal of Social Inclusion Studies, 2394481120945824.
15. Kapoor, D., Bhardwaj, A. K., Kumar, D., & Raina, S. K. (2014). Prevalence of diabetes mellitus and its risk factors among permanently settled tribal individuals in tribal and urban areas in northern state of sub-Himalayan region of India. International Journal of Chronic Diseases, 2014.
16. Priya, S., & Vishal, V. (2020). Lexical Reduplication in Gaddi. IJRAR-International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR), 7(4), 686-694.